भारत के भौतिक विभाग के मानचित्र को ध्यान से देखिए। उत्तर के मैदान के पश्चिम में भारत का मरुस्थल है। इसे थार का मरुस्थल भी कहते हैं। यहाँ पर पानी की कमी के कारण वनस्पति बहुत कम पायी जाती है। यहां का धरातल गर्म शुष्क और रेतीला है। इस कारण इस भाग में जनसंख्या बहुत कम है।

3. दक्षिण का पठार

दक्षिण का पठार उत्तर के विशाल मैदान के दक्षिण में शुरू होकर भारत के दक्षिण सिरे तक त्रिकोण रूप में फैला हुआ है। उत्तर पश्चिम में अरावली की पहाड़ियां हैं। इसमें मालवा का पठार, छोटा नागपुर का पठार सम्मिलित हैं। इस पठार में नर्मदा, ताप्ती, गोदावरी, कावेरी, कृष्णा एवं महानदी बहती हैं। इस पठारी भाग में विन्ध्याचल, सतपुड़ा, अन्नामलाई और नीलगिरि की पहाड़ियां हैं। यहां पर लोहा, कोयला, अभ्रक, मैंगनीज आदि खनिज पदार्थ निकाले जाते हैं।

4. पश्चिमी और पूर्वी घाट

दक्षिण के पठार के पश्चिम में पश्चिमी घाट है जो गुजरात, महाराष्ट्र, कर्नाटक, केरल से कन्याकुमारी तक फैले हैं। महाराष्ट्र तथा कर्नाटक में इन्हें सह्याद्रि कहते हैं। तमिलनाडु में नीलगिरि तथा केरल और तमिलनाडु के सीमा पर अन्नामलाई तथा कार्डामम पहाड़ियाँ हैं। पठार की पूर्वी सीमा पर पूर्वी घाट है जो कई हिस्सों या पहाड़ियों में विभाजित है।

5. तटीय मैदान एवं द्वीप समूह

अरब सागर और बंगाल की खाड़ी के किनारे मैदानी संकरी पट्टियां हैं जिन्हें तटीय मैदान कहते हैं। पूर्वी मैदान अधिक चौड़ा और उपजाऊ है। इस मैदान में बहने वाली नदियां- महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी है। इस भाग में जनसंख्या अधिक पायी जाती है। पश्चिमी तटीय मैदान असमतल चट्टानी और संकरा है। इस मैदान की दो प्रमुख नदियां - नर्मदा और ताप्ती है, जो अरब सागर में गिरती है।

भारत में दो द्वीप समूह भी है। ये बंगाल की खाड़ी में स्थित अंडमान निकोबार तथा अरब सागर में स्थित लक्षद्वीप है।

भारत के मानचित्र को ध्यानपूर्वक देखिए तथा निम्न की सूची बनाइए-

(1) भारत के प्रमुख पर्वतों के नाम-

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

(2) भारत की प्रमुख नदियों के नाम-

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

(3) भारत के पठारों के नाम

1 _____ 2 _____ 3 _____ 4 _____

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. भारत एशिया के किस भाग में स्थित है?

ब. भारत के उत्तर में स्थित देशों के नाम लिखिए।

स. भारत के दक्षिण में कौन सा महासागर है?

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. उत्तर के विशाल मैदान की विशेषताएं बताइए

ब. भारत को कितने प्राकृतिक विभागों में बाँटा जा सकता है? सभी का नाम लिखते हुए इनमें से एक भाग का वर्णन कीजिए।

3. सही उत्तर चुनिए-

अ. निम्नलिखित में से दक्षिण के पठार में कौन सा पर्वत है?

(i) हिमालय (ii) पटकोई

(iii) शिवालिक (iv) विन्ध्याचल

ब. निम्नलिखित में से भारत के दक्षिण में कौन सा देश है।

(i) चीन (ii) बांग्लादेश

(iii) पाकिस्तान (iv) श्रीलंका

स. निम्नलिखित में भारत का राज्य कौन सा है?

(i) दिल्ली (ii) अण्डमान निकोबार

(iii) पांडिचेरी (iv) अरुणाचल

द. हमारे देश में कुल कितने प्रदेश है-

(i) 27 (ii) 29

(iii) 28 (iv) 25

4. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. भारत में केंद्र शासित प्रदेशों की संख्या..... है।

ब. भारत का दक्षिणतम बिन्दु ..... है।

स. भारत का पूर्वी तटीय मैदान बहुत ..... है।

द. त्रिपुरा की राजधानी ..... है।

य. भारत के पश्चिम में ..... देश है।

5. **सही जोड़ी मिलाइए-**

क	ख
अ. मध्यप्रदेश	हैदराबाद
ब. उत्तरप्रदेश	शिमला
स. हरियाणा	भोपाल
द. हिमाचल प्रदेश	लखनऊ
य. आंध्रप्रदेश	चंडीगढ़

- **नीचे दिये गये भारत के मानचित्र में कुछ संकेत दिये हुए हैं उन संकेतों के पास उनके नाम लिखिए –** (i) हिमालय पर्वत, (ii) विन्ध्याचल पर्वत (iii) नीलगिरि पर्वत (iv) गंगा नदी, (v) नर्मदा नदी, (vi) मुम्बई, (vii) चेन्नई, (viii) भोपाल (ix) कर्क रेखा, (x) अरावली पर्वत, (xi) दिल्ली।

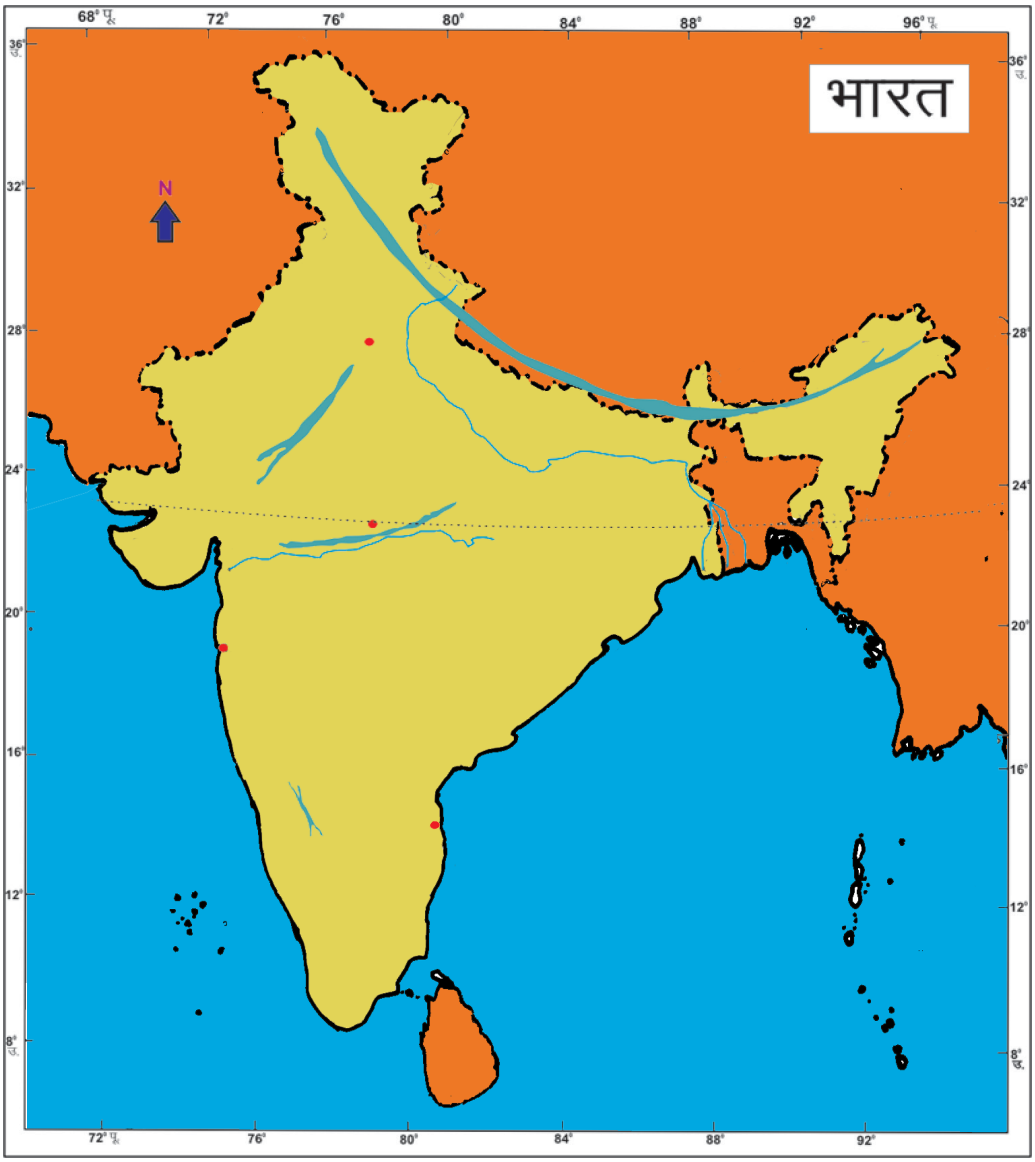

पाठ 17

भारत की जलवायु

आइए सीखें

- भारत की जलवायु मानसूनी क्यों कहलाती हैं?
- मानसून की उत्पत्ति के क्या कारण हैं?
- भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं?
- भारत की प्रमुख ऋतुएं- कौन-कौन सी हैं?
- भारत में वर्षा का वितरण किस प्रकार है?
- भारत की जलवायु की प्रमुख विशेषताएं कौन-कौन सी हैं।

भारत मानसून जलवायु वाला देश है। यहां के लोगों का जीवन और उनके कार्य मानसून से प्रभावित होते हैं। क्या है यह मानसून? मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' शब्द से हुई है जिसका शाब्दिक अर्थ है 'मौसम'। इसका प्रयोग अरब के नाविकों द्वारा अरब सागर में 6 माह उत्तर-पूर्व से चलने वाली हवाओं के लिए करते थे। जो आज भी प्रचलित है। इस प्रकार 'मानसून' शब्द से आशय है ऐसी पवनें जो एक निश्चित अवधि में एक निश्चित दिशा में चलती हैं। मानसूनी पवनों के कारण ही भारत की जलवायु को मानसूनी जलवायु कहा जाता है।

मानसून पवनों की उत्पत्ति को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बातों को समझना आवश्यक है-

- ताप का प्रमुख स्रोत सूर्य है। ताप के कारण ही वायु गर्म और ठंडी होती है। वायु में भार होता है जिसे वायुदाब कहते हैं।
- गर्म वायु हल्की और ठंडी वायु भारी होती है।
- हल्की वायु से निम्न दाब तथा भारी वायु से अधिक दाब निर्मित होता है।
- पवन हमेशा अधिक दाब से निम्न दाब की ओर चलती है।
- जब वायुदाब में परिवर्तन होता है तो **वायु** चलने की दिशा में भी परिवर्तन होता है।
- ऊपर से नीचे और नीचे से ऊपर चलने वाली हवा को वायु तथा धरातल के समानान्तर चलने वाली हवा को **पवन** कहते हैं।

मानसून की उत्पत्ति

हमारा देश उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। जब सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में चमकता है तो हमारे देश में ग्रीष्म

ऋतु होती है और तापमान में वृद्धि होने लगती है। सम्पूर्ण उत्तर भारत और पाकिस्तान पर अधिक तापमान होता है। अधिक ताप के कारण उत्तरी भारत में निम्न वायु दाब उत्पन्न होता है। इसी समय दक्षिण में स्थित हिन्द महासागर में तापमान कम होने के कारण अधिक दाब रहता है। अधिक वायु दाब से निम्न दाब की ओर पवन चलने लगती है। चूंकि ये पवनें समुद्र (हिन्द महासागर) से स्थल भाग (भारतीय उप महाद्वीप) की ओर चलती है। इसलिए ये वाष्प भरी होती है। इन वाष्प भरी आर्द्र वायु से ही पूरे देश में वर्षा होती है। ये ग्रीष्मकालीन मानसून पवनें होती हैं।

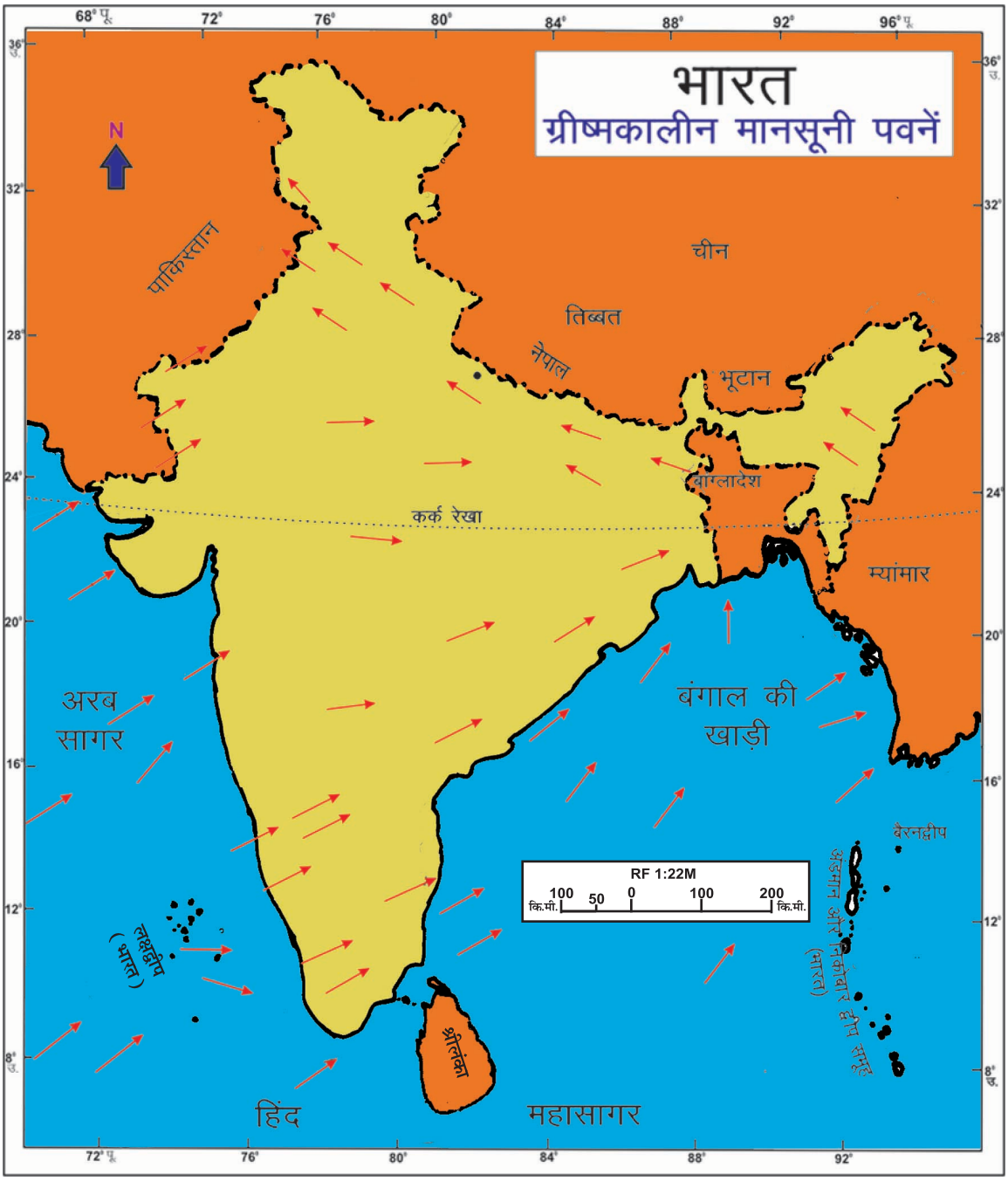

जब सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में चमकता है तो उत्तरी भारत तथा पाकिस्तान ठंडा हो जाता है। भारत में जाड़े की ऋतु होती है और हिन्द महासागर गर्म होने लगता है। हिन्द महासागर के गर्म होने से वहाँ निम्न वायु दाब स्थापित हो जाता है। इसी समय उत्तरी भारत शीत ऋतु के प्रभाव में रहता है और वहां अधिक वायु दाब होता है। इसी के साथ पवन की दिशा में भी परिवर्तन हो जाता है। पवनें स्थल (भारतीय उप महाद्वीप) से समुद्र (हिन्द महासागर) की ओर चलने लगती है। स्थल से चलने के कारण ये शुष्क और ठंडी होती है। इसे शीतकालीन मानसूनी पवनें भी कहतें हैं।

इस प्रकार ऋतु परिवर्तन के अनुसार पवनों की दिशा में परिवर्तन होना मानसून की उत्पत्ति कहलाती है। **भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक-** भारत की जलवायु को निम्नलिखित कारक प्रमुख रूप से प्रभावित करते हैं- (1) भारत की भौगोलिक स्थिति (2) धरातलीय स्वरूप (3)

प्रचलित पवनें।

(i) भारत की भौगोलिक स्थिति- भारत 8°.4' से 37°.6' उत्तरी अक्षांशों के बीच स्थित है। कर्क रेखा इसे लगभग दो बराबर भागों में विभाजित करती है। भारत के दक्षिण में हिन्द महासागर फैला है। उत्तर में ऊँची-ऊँची हिमालयीन पर्वतमालाएँ हैं। तीन ओर से समुद्र द्वारा घिरा होने से पर्याप्त मात्रा में पवनों को आर्द्रता मिलती है।

(ii) धरातलीय स्वरूप- उत्तर में हिमालय पर्वत दीवार की तरह पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है। जो उत्तरी ध्रुव से आने वाली ठंडी हवाओं को उत्तर में ही रोककर भारत को ठंड से बचाता है वहीं दूसरी ओर आर्द्रता से लदी मानसूनी पवनों को रोककर भारत में वर्षा कराता है।

(iii) प्रचलित मौसमी पवनें- यदि भारत में मौसम के अनुसार प्रचलित पवनों की दिशा नहीं बदलती तो यह एक शुष्क भू-भाग या मरुस्थल होता उत्तर में एशिया महाद्वीप में वायुदाब परिवर्तन होने से प्रचलित पवनों की दिशा में भी परिवर्तन होता रहता है।

भारत की ऋतुएं

भारतीय सर्वेक्षण विभाग द्वारा ऋतुओं का विभाजन इस प्रकार किया गया है-

1. शीत ऋतु
2. ग्रीष्म ऋतु
3. वर्षाऋतु
4. शरद ऋतु

शीत ऋतु- (15 दिसम्बर से 15 मार्च)- इस समय सूर्य दक्षिणी गोलार्द्ध में रहता है जिसके कारण उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित भारत में शीत ऋतु होती है। उत्तरी भारत में तापमान निम्न और वायुदाब उच्च रहता है। पवनें उच्च दाब से निम्न दाब अर्थात स्थल से समुद्र की ओर चलने लगती है। स्थल से चलने के कारण ये ठंडी और शुष्क होती है। इनकी दिशा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर होती है। तापमान तेजी से नीचे गिरने लगता है। इस ऋतु की तीन विशेषताएं हैं-

1. सम्पूर्ण उत्तरी भारत शीत लहर की चपेट में आ जाता है।
2. उत्तर-पश्चिमी भारत में पश्चिमी चक्रवातों से थोड़ी वर्षा हो जाती है।
3. बंगाल की खाड़ी के ऊपर से लौटती हुई मानसून पवनों द्वारा तमिलनाडु के तट पर वर्षा होती है।

जब सामान्य तापमान 5° सेल्सियस से भी कम हो जाता है उस समय चलने वाली ठंडी हवा को शीत लहर कहते हैं।

ग्रीष्म ऋतु- (15 मार्च से 15 जून) इस अवधि में सूर्य उत्तरी गोलार्द्ध में तेज चमकने लगता है। तापमान में क्रमशः वृद्धि होने लगती है। सम्पूर्ण उत्तरी भारत गर्म हो जाता है। उत्तर-पश्चिमी भागों में तापमान 48° सेल्सियस तक पहुंच जाता है। दोपहर में गर्म और शुष्क हवाएँ चारों ओर चलने लगती है। दोपहर में चलने वाली इन हवाओं को 'लू' कहते हैं।

वर्षा ऋतु- (15 जून से 15 सितम्बर) - यह समय आगे बढ़ते हुए मानसून का होता है। इस समय भारत में हवाओं की दिशा दक्षिण पश्चिम से उत्तर-पूर्व की ओर होती है। जून के प्रारंभ में दक्षिण-पश्चिम मानसून केरल के तट पर पहुंच जाता है। इसी के साथ वर्षाऋतु प्रारंभ होती है। आर्द्रता युक्त मानसूनी गर्म पवनें मध्य जुलाई तक भारत के अधिकांश भागों में फैल जाती है। जिससे मौसमी दशाएँ पूर्णतः बदल जाती है। इन पवनों से संपूर्ण भारत में वर्षा होने लगती है।

शरद ऋतु- (15 सितम्बर से 15 दिसम्बर)- इस समय उत्तरी भारत के तापमान में गिरावट आने लगती है। अतः अधिक वायु दाब क्षेत्र बनता है। हवा की दिशा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर होती है। स्थल से सागर की ओर चलने के कारण इन हवाओं से वर्षा नहीं होती। लौटती हुई मानसूनी पवनें बंगाल की खाड़ी से आर्द्रता ग्रहण कर तमिलनाडु के पूर्वी तट पर वर्षा करती है।

वर्षा का वितरण

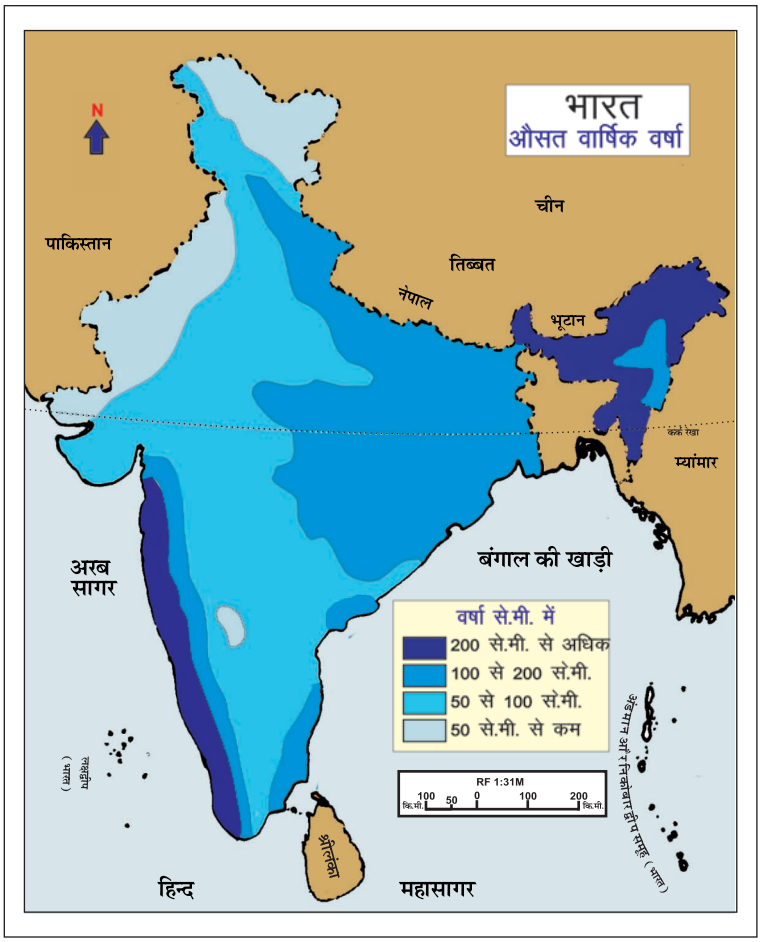

उपर्युक्त मानचित्र को ध्यान से देखें। मानचित्र में वर्षा का वितरण दिखाया गया है। भारत में वर्षा का वितरण असमान है। भारत के पश्चिमी घाट तथा उत्तरपूर्वी भागों में वर्षा का वार्षिक औसत 300 से.मी. से भी अधिक रहता है। मध्यवर्ती एवं उत्तर-पूर्वी भागों में 100 से 300 से.मी. तक तथा मध्यवर्ती और दक्षिणी भारत के बड़े क्षेत्र में 40 से 100 से.मी. वर्षा होती है। पश्चिमी राजस्थान की मरुभूमि, दक्षिण के पठार का मध्यवर्ती भाग और कश्मीर में कारगिल क्षेत्र में बहुत कम (40 से.मी. से भी कम) वर्षा होती है। भारतीय मरुस्थल और कारगिल क्षेत्र में तो 10 से.मी. से भी कम वर्षा होती है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत में वर्षा का वितरण बहुत ही असमान है।

सर्वाधिक वर्षा वाले स्थान चेरापूंजी और मॉसिमराम है। ये दोनों स्थान मेघालय राज्य में हैं।

भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएं-

- भारत की जलवायु पूर्णत: मानसूनी है।
- अधिकांश वर्षा मात्र चार माह जून से सितम्बर में हो जाती है।
- उत्तरी भारत में तापान्तर अधिक तथा दक्षिणी भागों में कम पाया जाता है। (अधिक और निम्न ताप के बीच का अंतर)
- भारत में बाढ़ और सूखा के समाचार एक साथ आते हैं।
- वर्षा का वितरण बहुत ही असमान है कहीं बहुत ज्यादा तो कहीं बहुत कम होती है।
- जलवायु भारतीय जन जीवन को प्रभावित करती है।
- देश के भीतरी भागों में महाद्वीपीय और तटीय भागों में सम जलवायु दशाएं पाई जाती हैं।
- मानसून के पूर्व तथा उसके बाद चक्रवात आते हैं। जाड़े की ऋतु में भी चक्रवात आते हैं। ये चक्रवात वर्षा लाते हैं।

अभ्यास प्रश्न

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

अ. मानसून किसे कहते हैं?

ब. लौटता मानसून क्या है?

स. तापान्तर किसे कहते हैं?

द. भारत की जलवायु कौन सी है?

य. भारत में कौन-कौन सी चार ऋतुएं होती हैं?

र. भारत में शीतऋतु की सामान्य दशाओं का वर्णन कीजिए।

2. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

अ. भारत की जलवायु को प्रभावित करने वाले प्रमुख कारक कौन-कौन से हैं? लिखिए।

ब. भारतीय जलवायु की प्रमुख विशेषताएं लिखिए।

स. भारत में मानसून की उत्पत्ति किस प्रकार होती है? लिखिए।

3. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए-

अ. शीत ऋतु में पश्चिमोत्तर भारत में वर्षा ..... द्वारा होती है।

ब. जब तापमान ऊँचा होता है तो वायुदाब ..... होता है।

स. ग्रीष्म ऋतु में उत्तर- पश्चिमी भारत में दोपहर बाद चलने वाली गर्म पवन को ..... कहते हैं।

द. जब तापमान 5 सेल्सियस से भी कम होता है उस समय चलने वाली ठंडी हवा को ..... कहते हैं।

- **भारत के मानचित्र में निम्नलिखित को दर्शाइये-** कर्क रेखा, चेरापूंजी एवं मॉसिमराम, ग्रीष्मकालीन पवनें, अत्यधिक वर्षा वाले क्षेत्र, अरब सागर, बंगाल की खाड़ी, भारतीय मरुस्थल

विविध प्रश्नावली-II

I. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में लिखिए-

1. ताम्राश्मकाल किसे कहते हैं?
2. सिंधु घाटी सभ्यता किसे कहते हैं?
3. हड़प्पा सभ्यता की नगरीय विशेषताएँ लिखिए।
4. हड़प्पा सभ्यता की जीवनदायिनी नदी का नाम लिखिए।
5. हड़प्पा सभ्यता की शिल्प व तकनीकी ज्ञान की मुख्य विशेषताएँ लिखिए।
6. जनपद और महाजनपद में अन्तर लिखिए।
7. 600 ई. पूर्व में मध्यप्रदेश में कौन-कौन से जनपद थे?
8. वैदिककालीन लोगों के खानपान के बारे में लिखिए।
9. वैदिककाल के प्रारंभ में औजार किस धातु से बनाये जाते थे? उत्तर वैदिक काल में इनमें क्या अन्तर आया था।
10. श्रेणी किसे कहा जाता था?
11. चन्द्रगुप्त मौर्य से पराजित होने के बाद सैल्यूकस ने क्या किया?
12. मध्यप्रदेश के किस स्थान पर चार सिंहों वाला अशोक का स्तम्भ मिला है?
13. सम्राट अशोक उज्जैन में कितने वर्ष रहा?
14. ग्राम शिक्षा समिति के कार्य लिखिए।
15. अनुसूचित जनजाति से आशय लिखिए।
16. राष्ट्रध्वज के लम्बाई और चौड़ाई का अनुपात बताइए।
17. भारत के राष्ट्रीय पशु का नाम लिखिए।
18. भारत में अधिकांश वर्षा कौन से महीनों में होती है?
19. शीतकाल में भारत के कौन से राज्य में वर्षा होती है?
20. भारत के पूर्व एवं पश्चिम दिशा में कौन-कौन से देश है?
21. भारत की उत्तर दिशा में कौन सा पर्वत है?

II. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर विस्तार से लिखिए-

1. मगध साम्राज्य का विस्तार किन-किन कारणों से हुआ लिखिए।
2. हड़प्पा सभ्यता से आशय बताते हुए इस सभ्यता के पतन के कारणों का उल्लेख कीजिए।
3. वैदिककाल के सामाजिक व आर्थिक जीवन का वर्णन कीजिए।
4. मगध साम्राज्य के आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक जीवन पर प्रकाश डालिए।
5. सामुदायिक विकास और जनसहयोग के आपसी संबंध पर प्रकाश डालिए।
6. भारत को प्राकृतिक विभागों में बाँटिए तथा किसी एक प्राकृतिक विभाग का विस्तार से वर्णन कीजिए।
7. भारत की जलवायु की विशेषताएँ बताइए ।

III. बहुविकल्पीय प्रश्न -

1. हड़प्पा सभ्यता के लोगों को किस धातु का ज्ञान नहीं था-
   (अ) सोना (ब) चाँदी (स) ताँबा (द) लोहा
2. मध्यप्रदेश के किस स्थल की खुदाई से हड़प्पा सभ्यता की मुहर (सील) मिली है?
   (अ) महेश्वर (ब) नागदा (स) कुतवार (द) कायथा
3. अवन्ति महाजनपद का शासक था -
   (अ) बिंबिसार (ब) अजातशत्रु (स) उदयन (द) प्रद्योत

4. पंचमार्क (ठप्पे लगे सिक्के) का प्रचलन था -
(अ) हड़प्पा काल में (ब) जनपद व महाजनपद काल में
(स) वैदिक काल में (द) पाषाण काल में

5. जन, गण, मन ..... है -
(अ) राष्ट्रीय गीत (ब) राष्ट्रीय गान (स) प्रादेशिक गीत (द) राष्ट्रीय प्रतीक

6. भील किस वर्ग में आते हैं-
(अ) अनुसूचित जाति (ब) अनुसूचित जनजाति (स) अन्य पिछड़ा वर्ग (द) सामान्य

7. भारत एशिया के किस भाग में स्थित है -
(अ) पूर्व (ब) पश्चिम (स) उत्तर (द) दक्षिण

8. भारत के दक्षिण में स्थित है-
(अ) नेपाल (ब) पाकिस्तान (स) बांग्लादेश (द) श्रीलंका

9. सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान किस राज्य में स्थित है-
(अ) असम (ब) मेघालय (स) अरुणाचल प्रदेश (द) त्रिपुरा

IV. खाली स्थान की पूर्ति कीजिए-

1. सिन्धु घाटी की सभ्यता को ..... सभ्यता भी कहते हैं।
2. हड़प्पा सभ्यता के ताम्राश्म काल को ..... युग भी कहते हैं।
3. अजातशत्रु के बाद मगध की गद्दी पर ..... बैठा।
4. उज्जैन का प्राचीन नाम ..... है।
5. नन्द वंश का संस्थापक ..... था।
6. शिशुनाग ..... प्रदेश का शासक था।
7. जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर ..... थे।
8. गौतम बुद्ध के बचपन का नाम ..... था।
9. ..... युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हुआ।
10. 'इंडिका' पुस्तक के लेखक ..... हैं।
11. शुंग वंश की स्थापना ..... ने की।
12. क्षेत्रफल की दृष्टि से संसार में भारत का स्थान ..... है।
13. अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी ..... है।
14. भारत की जलवायु ..... है।

V. असमान को अलग कीजिए-

1. दजलाफरात, सिन्धु, नील, कालीबंग
2. लोथल, कालीबंगा, धौलाबीरा, भोपाल
3. ऋषि, श्रेष्ठी, मुखिया, पुलिस
4. ब्राह्मण, वैश्य, क्षत्रिय, सुनार
5. भारत, अवन्ति, मगध, कौशल
6. काशी, वत्स, अंग, अजातशत्रु
7. भील, भगोरिया, सहरिया, पिठौरा
8. मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, अगरतला, पंजाब
9. हिमाद्रि, हिमाचल, अरावली, शिवालिक

पाठ 18

शुंग सातवाहन एवं कुषाण काल

(200 ई.पू. से 300 ई. तक का भारत)

आइए सीखें

- 200 ई.पू. से 300 ई. तक का भारत की स्थिति कैसी थी।
- उत्तर भारत के राजवंशों के बारे में।
- दक्षिण भारत के राजवंशों के बारे में।

पाठ 12 में मौर्य साम्राज्य के बारे में जानकारी दी गई थी। आपने पहले यह भी जाना कि दक्षिण में कई राज्य थे। मौर्य साम्राज्य के विघटन के बाद के समय की जानकारी इस पाठ में दी गई है। लगभग 200 ई.पू. से 300 ई. तक का समय भारत के इतिहास में अत्यधिक उथल-पुथल का समय माना जाता है।

उस समय के भारत में कई छोटे-छोटे राज्यों का उदय हुआ। जैसे शुंग, कण्व, सातवाहन, नाग, कुषाण, चोल पाण्डय और चेर इत्यादि प्रमुख थे।

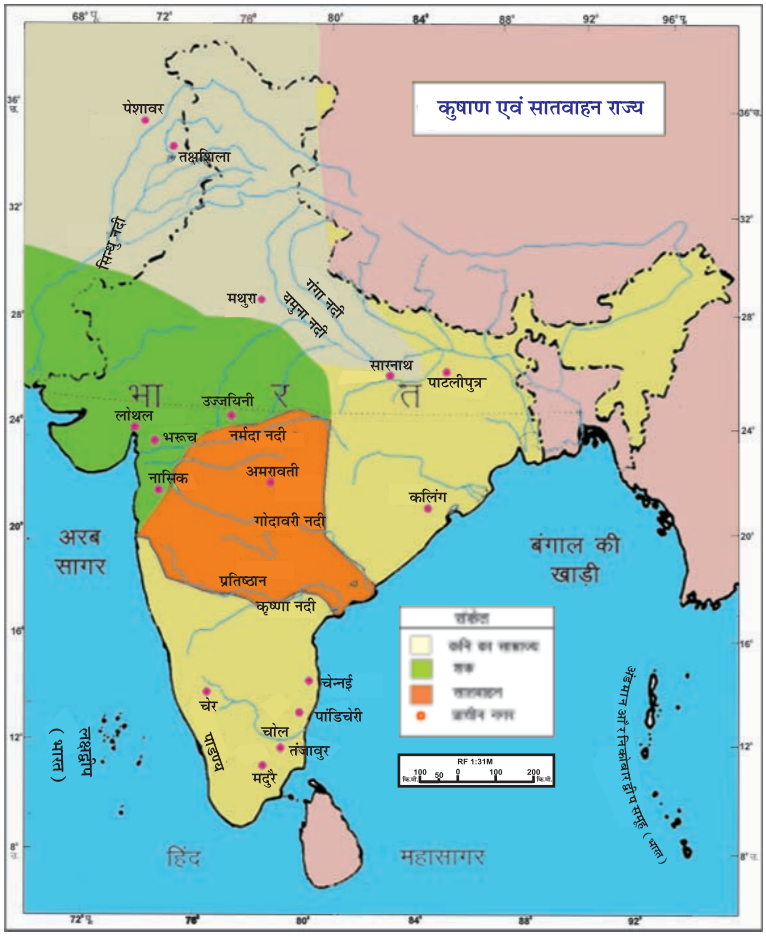

शुंग वंश - मौर्य वंश के अंतिम शासक बृहद्रथ की हत्या करने के बाद पुष्यमित्र शुंग ने इस वंश की स्थापना 185 ई. पूर्व की।

मध्यप्रदेश के बेसनगर (विदिशा के पास एक स्थान) को शुंग राजाओं ने अपनी दूसरी राजधानी बनाया। यहीं पर यवन राजा एन्तीकस के राजदूत हैलियोडोरस का स्तंभ लेख है जिसमें उसके द्वारा भागवत धर्म स्वीकार करने की बात है। इसे स्थानीय लोग आज ''खाम्बबाबा'' कहते हैं।

खुदाई में यहाँ दूसरी शताब्दी ई.पू. के प्राचीनतम विष्णु मंदिर के प्रमाण मिले हैं। विदिशा में लुहांगी पहाड़ी पर शुंगकालीन स्तम्भ के अवशेष हैं। शुंग वंश में दस राजा हुए। पुष्यमित्र, अग्निमित्र, वासुदेव, भागभद्र आदि। इस वंश ने लगभग 112 वर्षों तक राज्य किया। उत्तर भारत के क्षेत्र में शुंग, कण्व, शक, नाग, कुषाण, हिन्द यूनानी वंशों का शासन रहा था। जबकि दक्षिण भारत में सातवाहन, चोल, चेर, पाण्डय राजाओं का शासन था।

कण्व वंश - शुंग वंश के अंतिम शासक देवभूति की हत्या करके उसके मंत्री वासुदेव कण्व ने इस वंश की स्थापना की। इस वंश में भूमिमित्र, नारायण तथा सुदर्शन राजा हुये।

शक - शक लोग उत्तर पश्चिमी दिशा से आए थे। शक शासकों में पहला शासक मोआ या मावेज था। किन्तु इस वंश में सबसे प्रसिद्ध राजा रुद्रदमन हुआ था। जिसने उज्जैन को अपनी राजधानी बनाया था। उसके शासन काल में प्रजा अत्यधिक सुखी थी। उसने कृषि के विकास के लिए नहरें एवं बांध बनवाकर अच्छी सिंचाई व्यवस्था करने के साथ ही प्रजा के कर माफ कर दिये थे। उसने सातवाहन राजाओं को मध्यभारत से भगाकर आंध्रप्रदेश में बसने के लिए विवश कर दिया था। इस वंश के शासकों ने गुप्त सम्राट चन्द्रगुप्त द्वितीय के शासनकाल तक शासन किया था।

सातवाहन - दक्षिण भारत में सबसे प्रमुख सात वाहन राजा थे। प्रारंभ में नर्मदा नदी के उत्तर तक इनका राज्य फैला हुआ था। लेकिन शकों ने इन्हें पराजित कर आंध्रप्रदेश की ओर धकेल दिया था। इसलिये इन्हें आंध्रभृत्य (सातवाहन) नाम से भी जाना जाता है। इस वंश का संस्थापक सिमुक था। इस वंश में सबसे प्रतापी राजा सातकर्णी और गौतमी पुत्र सातकर्णी हुए। जिनके शासनकाल में सातवाहन राज्य का सर्वाधिक विकास हुआ। सातवाहनों के पड़ोसी राजा 'शकों' से युद्ध होते रहे। जिनमें विजय कभी सातवाहनों की तो कभी शको की होती रही। अंत में गौतमी पुत्र सातकर्णी के बेटे वशिष्ठ ने शक राजा की कन्या से

साँची स्तूप का तोरण द्वार

विवाह कर शांति की स्थापना की। सातवाहन राजाओं के समय जंगल साफ करके गाँव बसाये गए, गोदावरी और कृष्णा नदियों की घाटियों में आवागमन के लिए नई सड़कें बनायी गईं। सातवाहनों के समय व्यापारिक वृद्धि हुई। इस समय ईरान, इराक, अरब और मिस्त्र से व्यापार होता था। सातवाहन राज्य सुव्यवस्थित, कुशल प्रशासन युक्त तथा समृद्धिशाली था। साँची स्तूप के तोरणद्वार सातवाहनों के समय ही बने थे। वहाँ इनका अभिलेख भी है।

कुषाण- इनका मूल स्थान चीन था जहाँ से ई.सन् के आरंभ में इन लोगों ने भारत की ओर प्रस्थान किया और धीरे-धीरे गंगा मैदान के पश्चिमी भाग तक अपना अधिकार स्थापित कर लिया। इसी वंश में कनिष्क प्रथम सबसे अधिक प्रसिद्ध राजा हुआ। जिसके शासन काल में राज्य में धर्म, साहित्य और कला का खूब विकास हुआ। कनिष्क के समय ही कुण्डलवन कश्मीर में चौथी बौद्ध महासभा हुई। इसमें बौद्ध धर्म की महायान शाखा को मान्यता मिली। इससे बुद्ध की मूर्ति बनायी जाने लगी जबकि पहले बुद्ध की मूर्ति नहीं बनाई जाती थी। शक संवत की शुरुआत भी कनिष्क ने की थी।

नागवंश- दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में विदिशा, पवाया (पदमावतीनगर) कुतवार (कुंतलपुरी) तथा मथुरा क्षेत्र में एक नये राजवंश का उदय हुआ। जो नागवंश के नाम से प्रसिद्ध था। कुषाण वंश के अंतिम नरेशों की कमजोरी का पूरा लाभ उठाकर इस वंश के राजाओं ने अपना साम्राज्य विस्तार किया तथा विदेशियों को भारत से खदेड़ने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

चोल- चेन्नई के दक्षिण में स्थित वर्तमान तंजौर और तिरुचिरापल्ली के आस-पास के क्षेत्र पर चोल शासकों ने अपना अधिकार स्थापित किया था। इसलिए इस क्षेत्र को चोल मंडल के नाम से जाना जाता था। प्रारंभिक चोलों के बारे में ज्यादा जानकारी अभी ज्ञात नहीं है। दूसरी शताब्दी ई. में चोल वंश का प्रसिद्ध शासक कारिकाल था। उसने लंका पर आक्रमण किया और वहाँ से हजारों श्रमिक अपने साथ लाया, जिन्होंने कावेरी नदी पर बांध बनाया। पुरानी राजधानी उरैयूर के स्थान पर उसने नई राजधानी कावेरी पद्दिनाम बनाई।

चेर- चोल राज्य के पश्चिम में उसका पड़ोसी राज्य चेर था, जो आज के केरल मालाबार के तटीय क्षेत्र में स्थापित था। अशोक के अभिलेखों में भी चेर, चोल,पाण्डय का उल्लेख मिलता है। चेर राजा नेडुचेरलादान को वीर शासक माना जाता है उसने न केवल कई राज्यों को जीता और रोम के जहाजी बेड़े को भी पकड़ लिया था।

पाण्डय- चोल राज्य के दक्षिण में पाण्डय राज्य था। इस राज्य की सीमा चेर राज्य से भी मिलती थी। यह राज्य आज के मदुरै और तिनेवली जिलों के आसपास के क्षेत्र में फैला था। अशोक के अभिलेख में इसका नाम आया था। एक पाण्डय राजा ने पहली शताब्दी ई.पू. में रोम के सम्राट अगस्टस के पास अपना राजदूत भेजा था। इनके शासन काल में विद्या और व्यापार ने अत्यधिक उन्नति की थी।

हिन्द यूनानी- सिकन्दर के उत्तराधिकारियों का ध्यान भारत के उत्तर पश्चिम सीमा क्षेत्र की ओर गया।

जहाँ का व्यापार ईरान और पश्चिमी एशिया के साथ चलता था। उन्होंने गंधार क्षेत्र पर अपना अधिकार स्थापित किया। इन शासकों में मिनाण्डर सबसे अधिक लोकप्रिय हुआ। उसने बौद्ध धर्म ग्रहण किया था। तब उसका नाम मिलिन्द रखा गया था। यहां अनेक यूनानी शासकों पर हिन्दू धर्म का प्रभाव पड़ा। एक यवन (यूनानी) राजदूत हैलियोडोरस ने वैष्णव धर्म ग्रहण कर लिया और उसने बेसनगर (विदिशा) में एक गरुड़ स्तंभ बनवाया इसी पर एक अभिलेख खुदा हुआ है जिसमें लिखा है कि उसने यह स्तंभ लगवाया है।

जनजीवन- इस समय का जनजीवन आज से बहुत कुछ मिलता-जुलता था। अधिकतर लोग किसान थे। उनके परिवार में लोग एक साथ मिल-जुलकर रहते थे। इस समय तक लोग वर्ण व्यवस्था को (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र) अत्यधिक महत्व देने लगे थे। नृत्य, संगीत और काव्य पाठ से अधिकतर लोग अपना मनोरंजन करते थे। राजा ही राज्य का संचालन करता था। व्यापारियों की तरह ही लोग सामान या माल एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाते थे तो उनको कर देना पड़ता था। उत्तर भारत के किसान दक्षिण भारत के किसानों से अधिक सम्पन्न थे। उत्तर भारत का क्षेत्र सिन्धु और गंगा का मैदानी भाग होने के कारण अधिक उपजाऊ था। इसी तरह दक्षिणी भारत एक पहाड़ी क्षेत्र था। इसलिए यहाँ कम उपजाऊ भूमि थी तथा यहाँ खेती करना कठिन था। वहाँ लोग पशु पालते थे। कुछ ऐसे नगर समुद्र के किनारे थे, जहाँ से व्यापार करना सहज था।

रोमन व्यापार- इस समय रोम के जहाज व्यापार करने के लिए मालाबार और तमिलनाडु के पूर्वी तट पर आते थे, जो भारत से मसाले, कपड़े, कीमती पत्थर और बंदर व मोर जैसे पशु-पक्षी अपने साथ ले जाते थे और बदले में भारतीयों को बहुत सा धन एवं सोना प्राप्त होता था। इसलिए दक्षिण के लिये कहा जाता था कि दक्षिण भारत के राज्यों को रोम के सोने ने धनवान बना दिया था।

समाज एवं धर्म- इस काल में उत्तर भारत और दक्षिण भारत में धर्म की स्थिति अलग-अलग थी। उत्तर भारत में बौद्ध धर्म बहुत लोकप्रिय था। जनता को बौद्ध धर्म की शिक्षा देने के लिये उनके मध्य भिक्षुओं को भेजा जाता था। इस समय अश्वघोष और नागार्जुन के ग्रंथों ने बौद्ध धर्म के प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया था। कुछ राजाओं के द्वारा जैन धर्म को भी राजाश्रय प्रदान किया गया था।

समाज में वैदिक धर्म भी पूर्ववत ही प्रचलित था, लेकिन इस काल में पहले के देवी-देवताओं को बदल दिया गया था, जो इस काल की प्रमुख विशेषता मानी जाती है। अब शिव, विष्णु तथा अन्य देवी-देवताओं की उपासना अधिक होने लगी थी तथा लोग यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानों के बजाय ईश्वर की भक्ति को अधिक महत्व देने लगे थे।

दक्षिण भारत में यद्यपि बौद्ध धर्म एवं जैन धर्म के अनुयायी थे अपितु यहाँ पुराने वैदिक देवी-देवताओं की पूजा एवं धार्मिक अनुष्ठानों को अधिक महत्व दिया जाता था। तमिल लोगों का सबसे प्रसिद्ध देवता मुरुगन था, जिसे पर्वतवासी देवता भी कहा जाता था। इसी तरह समुद्र तट के निवासी समुद्र देवता की आराधना करते थे।